दयानंद कला महाविद्यालय लातूर



हिंदी विभाग

बी. ए. तृतीय वर्ष

सत्र - v

हिंदी अनूदित साहित्य

पेपर कोड : HHNCTI303

यूनिट 1 और 2 : डॉ. वर्षा कांबळे

यूनिट 3 और 4 : डॉ. महरुद्र सिरसट

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Faculty of Humanities- Hindi- Third Year- *Semester – V*-Major

Paper Code : HHINCT1303, Title हिंदी अनूदित साहित्य

Curriculum Details: (for 4 Credits)Module No.	Unit No.	Name of Topic	Hrs. Required tocover the contents 1 Hrs.=60 M.
1.0		अनुवाद	15
	1.1	अनुवाद: अर्थ,परिभाषाएँ एवं स्वरुप	
	1.2	अनुवाद के प्रकार	
	1.3	साहित्यिक अनुवाद की उपयोगिता	
	1.4	अनूदित साहित्य की परंपरा	
2.0		विजय तेन्दुलकर-खामोश ! अदालत जारी है -नाटक- (अनुवाद-सरोजिनी वर्मा) -राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.,1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग ,दरियागंज, नई दिल्ली-110002	15
	2.1	खामोश ! अदालत जारी है :नाटक कथावस्तु	
	2.2	खामोश ! अदालत जारी है : ऐतिहासिकता	
	2.3	खामोश ! अदालत जारी है :चरित्र-चित्रण	
	2.4	खामोश ! अदालत जारी है : नाटक का उद्देश्य	
3.0		मनोज बोरगावकर-नदीष्ट-उपन्यास (अनुवाद-गोरख थोरत)-सेतु प्रकाशन प्रा.लि. सी-21 ,सेक्टर-65,नोयडा (उत्तर प्रदेश)-201301	15
	3.1	नदीष्ट- उपन्यास की कथावस्तु	
		नदीष्ट- उपन्यास : मनुष्य और पर्यावरण	
	3.2	नदीष्ट- उपन्यास का उद्देश्य	
	3.3	नदीष्ट- उपन्यास की समीक्षा	
4.0		रचनाकार का परिचय	15
	4.1	विजय तेन्दुलकर - सामान्य परिचय	
	4.2	अनुवादक -सरोजिनी वर्मा – सामान्य परिचय	
	4.3	मनोज बोरगावकर- सामान्य परिचय	
	4.4	अनुवादक-गोरख थोरत - सामान्य परिचय	
		Total	60

Unit 1 अनुवाद

1.1 अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं

- **व्युत्पत्ति:** 'अनुवाद' शब्द संस्कृत की **'वद्' धातु** में **'अनु' उपसर्ग** और 'घयं' प्रत्यय के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है–पीछे या समान और 'वाद' का अर्थ है–कथन।
- **अंग्रेजी रूपांतर:** अंग्रेजी में इसके लिए **'Translation'** शब्द का प्रयोग होता है, जो लैटिन भाषा के Trans (पार) और Latus (ले जाना) से बना है–अर्थात् एक भाषा के विचार को पार करके दूसरी भाषा तक ले जाना।
- **अन्य नाम:** इसे क्षेत्रीय और पारंपरिक रूप से भाषांतर, तर्जुमा या उल्था भी कहा जाता है।

अनुवाद की परिभाषाएँ :

प्रमुख विद्वानों के अनुसार अनुवाद की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं:

- **यूज़िन नाइडा (Eugene Nida):** "अनुवाद का तात्पर्य है–स्रोत-भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना।"
- **डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा:** "विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना ही अनुवाद है।"
- **डॉ. भोलानाथ तिवारी:** एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत रूपांतरित करना अनुवाद है।

अनुवाद का स्वरूप :

अनुवाद का स्वरूप अत्यंत व्यापक और गतिशील है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

- **द्विभाषिक प्रक्रिया:** इसमें कम से कम दो भाषाओं का होना अनिवार्य है–**स्रोत भाषा** (जिससे अनुवाद किया जा रहा है) और **लक्ष्य भाषा** (जिसमें अनुवाद किया जा रहा है)।

- **अर्थ और भाव की प्रधानता:** अनुवाद केवल शब्दों का अक्षर-प्रति-अक्षर मेल नहीं है, बल्कि यह मूल पाठ के **आंतरिक अर्थ, संवेदना और सांस्कृतिक संदर्भ** को लक्ष्य भाषा में जीवित रखने की कला है।
- **सांस्कृतिक सेतु:** यह केवल भाषा बदलने का माध्यम नहीं है, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों, समाजों और ज्ञान-विज्ञान के बीच संवाद स्थापित करने वाला एक **सांस्कृतिक सेतु** है।
- **प्रमुख घटक:** अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में तीन मुख्य तत्व शामिल होते हैं–**मूल सामग्री (स्रोत पाठ), अनुवादक, और पाठक (लक्ष्य भाषा के पाठक)**।
- **विभिन्न रूप:** विषय के आधार पर इसका स्वरूप अलग होता है, जैसे–साहित्यिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद, और कार्यालयी/विधिक अनुवाद।

1.2 अनुवाद के प्रकार

अनुवाद की प्रकृति, सामग्री और आवश्यकता के आधार पर इसे विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। मुख्य रूप से शब्दानुवाद, भावानुवाद और छायानुवाद को इसके बुनियादी प्रकार माना जाता है।

1. मुख्य या पारंपरिक प्रकार :

- **शब्दानुवाद :** इसमें स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्य भाषा में **अक्षरशः (Word-for-Word) अनुवाद** किया जाता है। इसमें व्याकरणिक संरचना और मुहावरों पर ध्यान नहीं दिया जाता, जिसके कारण कभी-कभी अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसका प्रयोग वैज्ञानिक या विधिक दस्तावेजों में अधिक होता है।
- **भावानुवाद :** इसमें शब्दों के स्थान पर **मूल कथ्य के भाव और विचार** को प्रधानता दी जाती है। अनुवादक स्रोत भाषा के वाक्य को समझकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार सहज रूप में व्यक्त करता है। साहित्यिक अनुवाद में यह सबसे लोकप्रिय विधा है।
- **छायानुवाद :** इसमें अनुवादक मूल रचना की केवल **'छाया' (Theme) या मूल विचार** को ग्रहण करता है और अपनी भाषा व संस्कृति के अनुसार उसमें आवश्यक बदलाव करके नई रचना तैयार करता है। नाटक, कहानी और फिल्मों के रूपांतरण में इसका उपयोग होता है।

2. शैली और तकनीकी के आधार पर प्रकार :

- **आशुनुवाद :** इसे **'तैयार अनुवाद'** या 'इंटरप्रिटेशन' भी कहते हैं। इसमें अनुवादक किसी वक्ता के भाषण को सुनते ही तुरंत (Real-time) लक्ष्य भाषा में मौखिक रूप से अनुवाद करता है। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों या राजनायिक वार्ताओं में इसका उपयोग होता है।
- **सारानुवाद :** इसमें लंबे मूल पाठ, भाषण या रिपोर्ट का पूरा अनुवाद न करके केवल उसके **मुख्य बिंदुओं और निष्कर्ष का सारांश** लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। प्रशासनिक और व्यावसायिक कार्यों में समय बचाने के लिए यह उपयोगी है।
- **पूर्ण अनुवाद :** इसमें मूल पाठ की एक-एक पंक्ति, पैराग्राफ और अध्याय का पूरी तरह से अनुवाद किया जाता है। इसमें कुछ भी छोड़ा नहीं जाता।
- **व्याख्यानुवाद :** जब मूल पाठ का केवल अनुवाद करने से बात स्पष्ट नहीं होती, तब अनुवादक अपनी ओर से **व्याख्या, टिप्पणियाँ या फुटनोट्स** जोड़कर उसे समझाता है। धार्मिक ग्रंथों और प्राचीन दार्शनिक पुस्तकों के अनुवाद में यह शैली अपनाई जाती है।

3. विषय-वस्तु के आधार पर प्रकार :

- **साहित्यिक अनुवाद :** कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक का अनुवाद। इसमें भाषा की तरलता, सौंदर्य और कलात्मकता को बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है।
- **तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुवाद :** विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी से जुड़े ग्रंथों का अनुवाद। इसमें **पारिभाषिक शब्दावली** की सटीकता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।
- **कार्यालयी/प्रशासनिक अनुवाद :** सरकारी विभागों, नियमों, ज्ञापनों और सूचनाओं का अनुवाद। इसकी भाषा पूरी तरह से औपचारिक और मानक होती है।

1.3 अनुवाद की उपयोगिता

साहित्यिक अनुवाद केवल एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में बदलना नहीं है, बल्कि यह दो अलग-अलग संस्कृतियों, विचारों और संवेदनाओं का मिलन है। जब ज्ञान, भावना और कला को सीमाओं के पार ले जाने की बात आती है, तो साहित्यिक अनुवाद की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है।साहित्यिक अनुवाद की प्रमुख उपयोगिता और महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक एकता :

- **संस्कृतियों को जोड़ना:** साहित्य किसी भी समाज का दर्पण होता है। अनुवाद के माध्यम से एक देश के लोग दूसरे देश के रहन-सहन, परंपराओं, त्योहारों और जीवन दर्शन को समझ पाते हैं।
- **पूर्वाग्रहों का अंत:** यह विभिन्न देशों और समुदायों के बीच की दूरियों और रूढ़िवादिता को कम करके वैश्विक बंधुत्व (Global Brotherhood) की भावना को बढ़ावा देता है

2. विश्व साहित्य तक पहुँच :

- **महान रचनाओं का आनंद:** यदि अनुवाद न हो, तो आम पाठक शेक्सपियर, लियो टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की, या होमर जैसे महान लेखकों की रचनाओं को कभी नहीं पढ़ पाते।
- **ज्ञान का विस्तार:** भारतीय पाठकों के लिए रूसी, फ्रांसीसी, जापानी या लातिन अमेरिकी साहित्य को अपनी भाषा में पढ़ना अनुवाद के कारण ही संभव हो सका है।

3. स्थानीय भाषा और साहित्य का समृद्धिकरण :

- **नए शब्दों का आगमन:** जब किसी विदेशी या अन्य क्षेत्रीय कृति का अनुवाद होता है, तो लक्ष्य भाषा को नए शब्द, मुहावरे और अभिव्यक्तियाँ मिलती हैं, जिससे उस भाषा का शब्दकोश समृद्ध होता है।
- **विधाओं का विकास:** हिंदी साहित्य में उपन्यास, निबंध और आधुनिक नाटकों जैसी कई विधाओं का विकास शुरुआत में अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य से हुए अनुवादों के माध्यम से ही प्रेरित हुआ था।

4. राष्ट्रीय एकीकरण में भूमिका :

- **भाषाई विविधता में एकता:** भारत जैसे बहुभाषी देश में साहित्यिक अनुवाद राष्ट्रीय एकता का मुख्य आधार है। रवींद्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' (बांग्ला), मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ (हिंदी/उर्दू) या सुब्रमण्यम भारती की कविताएँ (तमिल) अनुवाद के माध्यम से ही पूरे देश की साझी विरासत बन पाई हैं।

5. लेखकों और विचारों को वैश्विक पहचान :

- **वैश्विक मंच:** अनुवाद स्थानीय लेखकों को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, गीतांजलि श्री के हिंदी उपन्यास **'रेत समाधि'** को जब डेज़ी रॉकवेल ने **'Tomb of Sand'** के रूप में अंग्रेजी में अनुवादित किया, तब उसे प्रतिष्ठित **अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार** मिला।

1.4 अनूदित साहित्य की परंपरा

भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य का इतिहास गवाह है कि ज्ञान और रचनात्मकता का प्रसार हमेशा अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। अनूदित साहित्य की परंपरा उतनी ही पुरानी है जितनी हमारी लिखित संस्कृति। भारत जैसे बहुभाषी देश और वैश्विक स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान में अनुवाद ने हमेशा एक रीढ़ की हड्डी की तरह काम किया है। वैश्विक और भारतीय संदर्भ में अनूदित साहित्य की परंपरा को निम्नलिखित कालखंडों और चरणों के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. वैश्विक संदर्भ में अनुवाद की परंपरा :

- **धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद:** दुनिया में अनुवाद की शुरुआत बड़े पैमाने पर धार्मिक ग्रंथों के प्रसार के लिए हुई। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में हिब्रू बाइबल का ग्रीक (यूनानी) भाषा में अनुवाद किया गया, जिसे **'सेप्टुआजेंट' (Septuagint)** कहा जाता है।
- **यूनानी ज्ञान का अरबी में रूपांतरण:** मध्यकाल (8वीं से 14वीं शताब्दी) में बगदाद में 'बैत अल-हिकमा' (House of Wisdom) की स्थापना हुई, जहाँ अरस्तू, प्लेटो और गैलन जैसे यूनानी दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के काम का अरबी में बड़े पैमाने पर अनुवाद हुआ। बाद में इसी अरबी ज्ञान का लैटिन में अनुवाद होने से यूरोप में **पुनर्जागरण (Renaissance)** का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. भारतीय संदर्भ में पारंपरिक काल :

भारत में अनुवाद की परंपरा पश्चिमी देशों की तरह 'अक्षरशः' (Word-for-Word) न होकर **पुनर्सृजन और रूपांतरण (Adaptation)** की रही है।

- **रामायण और महाभारत का क्षेत्रीय रूपांतरण:** संस्कृत की मूल रामायण और महाभारत का भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद या रूपांतरण किया गया। जैसे–तमिल

में कंबन की 'कंब रामायण', हिंदी में तुलसीदास की 'रामचरितमानस', और बांग्ला में कृत्तिवास की 'रामायण'। ये कोरे अनुवाद नहीं थे, बल्कि इनमें स्थानीय संस्कृति को समाहित किया गया था।

- **मध्यकाल और सूफ़ी/भक्ति परंपरा:** इस काल में संस्कृत के दार्शनिक ग्रंथों, उपनिषदों और भगवद्गीता का फारसी में अनुवाद हुआ। मुगल शहजादे **दारा शिकोह** ने 'सिर्र-ए-अकबर' नाम से 50 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया, जिसने भारतीय दर्शन को दुनिया के सामने रखा।

3. आधुनिक काल और औपनिवेशिक दौर :

18वीं और 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आगमन के बाद अनुवाद की परंपरा को एक नया प्रशासनिक और साहित्यिक मोड़ मिला।

- **फोर्ट विलियम कॉलेज (1800):** कोलकाता में स्थापित इस कॉलेज ने भारतीय भाषाओं (विशेषकर हिंदी और उर्दू) में गद्य (Prose) के विकास के लिए अरबी, फारसी और संस्कृत की किताबों का अनुवाद शुरू करवाया।
- **पाश्चात्य साहित्य का भारतीय भाषाओं में आगमन:** शेक्सपियर के नाटकों, जॉन मिल्टन की कविताओं और यूरोपीय उपन्यासों का हिंदी, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वयं बांग्ला और संस्कृत के कई नाटकों (जैसे 'मुद्राराक्षस', 'विद्यासुन्दर') का हिंदी में अनुवाद किया।

4. समकालीन दौर :

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार और विभिन्न संस्थाओं ने सुनियोजित तरीके से अनूदित साहित्य को बढ़ावा दिया।

- **साहित्य अकादेमी और नेशनल बुक ट्रस्ट (NBT):** इन संस्थाओं ने 'आदान-प्रदान' जैसी योजनाओं के तहत एक भारतीय भाषा के उत्कृष्ट साहित्य को अन्य सभी भारतीय भाषाओं (जैसे तमिल उपन्यास का हिंदी में, या असमिया कविता का मराठी में) में अनुवादित करने का बीड़ा उठाया।
- **वैश्विक पहचान का नया युग:** वर्तमान समय में भारतीय भाषाओं का साहित्य तेजी से अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवादित हो रहा है। हाल के वर्षों में गीतांजलि श्री

के उपन्यास 'रेत समाधि' (Tomb of Sand) [2022] और पेरुमल मुरुगन जैसे क्षेत्रीय लेखकों की कृतियों के अंग्रेजी अनुवादों ने वैश्विक स्तर पर धूम मचाई है।

Unit 2 विजय तेंडुलकर - खामोश ! अदालत जारी है - नाटक

(अनुवाद - सरोजिनी वर्मा)

2.1 खामोश ! अदालत जारी है : नाटक कथावस्तु

खामोश! अदालत जारी है (मराठी: शांतता! कोर्ट चालू आहे) एक मराठी नाटक है जिसे विजय तेंदुलकर ने १९६३ में लिखा और उसे पहली बार १९६७ में पेश किया गया। किसी गाँव में कुछ शिक्षकों एक नाटक का मंचन करने के बारे में सोचते हैं। जब कोई कलाकार नहीं आता तो एक स्थानीय मंचहस्त को उसकी जगह लेने के लिए कहा जाता है। एक तात्कालिक, मुक्तप्रवाह रिहर्सल की व्यवस्था की जाती है और नौसिखियों को अदालती प्रक्रियाओं के बारे में समझाने के लिए एक नकली परीक्षण का मंचन किया जाता है। एक अन्य कलाकार श्रीमती बेनारे के खिलाफ शिशु हत्या का नकली आरोप लगाया गया है। मुकदमे के दौरान धीरे-धीरे पता चलता है कि सचमुच मिस बेणारे के गर्भ मे मंडली के विद्वान अभिनेता का शिशु पल रहा है और वह अपनी जिम्मेदारी से भाग गया है। अब नाटक में अन्य पात्रों के मुखौटे उतरने शुरु होते हैं। अभिनेताओं की ईर्ष्या, छोटापन और पूर्वाग्रह साफ़ सामने आते हैं। मुकदमे का अंत इस प्रकार होता है कि मिस बेणारे को वही करने की सजा सुनाई जाती है जिसे करने के लिये उस पर मुकदमा चलाया गया था। यह खेल क्रूरता की सीमा पार कर वीभत्स हो जाता है। नाटक के हर फ़्रेम में बढता हुआ तनाव मज़ाक और ठहाकों पर खत्म होता है तो दूसरी तरफ़ मिस बेणारे असह्य मानसिक पीडा से तडपती है।

तेंदुलकर के नाटको में चरित्रांकन से लेकर संवाद, वस्त्र सज्जा से लेकर मंच परिकल्पना तक सबकुछ इस कदर सुनियोजित होता है कि निर्देशक के लिये अधिक परिवर्तन की आजादी नहीं होती। उनके नाट्यालेख की सरंचना मंच को केन्द्र में रखकर निर्मित होती है फ़लस्वरूप उसका प्रभाव कई स्तरों और अर्थों को खोलता है। जैसे नाटक के प्रारंभ में ही सामंत का संवाद " कडी खोलने में उंगली दब गई? यह सब पुराना है ना, इसलिये ऐसा होता है। आसानी से कडी खिसकती ही नहीं, और जो कहीं कुंडा बाहर रह गया और कडी खींच ली तो जानती हैं क्या होगा? दरवाजा अंदर से बंद और बाहर से कडी। बस समझिये, अंदर वाले को जेलखाना हो गया"। नाटक का

संपूर्ण अर्थ इन कुछ प्रारम्भिक पंक्तियों मे छिपा हुआ है। प्रतीत हो जाता है कि मिस बेणारे अनजाने जाल में कस रही है और बेणारे एक चरित्र के रूप में नारी की त्रासदी की प्रतीक हो जाती है।

कथावस्तु के मुख्य बिंदु:

- **नाटक मंडली का आगमन:** कुछ शौकिया कलाकार (जैसे - श्री काशीकर, मिसेज काशीकर, सुखात्मे, पोंक्षे, कर्णिक, रोकड़े और मिस लीला बेनारे) एक गांव में नाटक का मंचन करने पहुंचते हैं।
- **फर्जी अदालत (मॉक ट्रायल):** मंचन से पहले जब उनका एक सह-कलाकार (प्रोफेसर डामले) समय पर नहीं पहुंचता, तो खाली समय काटने के लिए वे आपस में एक 'फर्जी अदालत' सजाने का फैसला करते हैं ताकि स्थानीय युवक 'सामंत' को अदालत की कार्यवाही समझाई जा सके।
- **काल्पनिक से गंभीर आरोप:** यह खेल तब गंभीर रूप ले लेता है जब कटघरे में खड़ी मुख्य नायिका **लीला बेनारे** पर वास्तविक रूप से गंभीर और व्यक्तिगत आरोप लगाए जाने लगते हैं।
- **खुलासा और सामाजिक पाखंड:** नाटक के दौरान बेनारे पर 'भ्रूण हत्या' (Unwed mother / Foeticide) का आरोप लगाया जाता है और यह उजागर किया जाता है कि उसका अपने ही सहकर्मी व विवाहित प्रोफेसर डामले के साथ अवैध संबंध था।
- **स्त्री का दमन और पुरुषों की मानसिकता:** खेल-खेल में शुरू हुआ यह नाटक असल में मध्यवर्गीय समाज की द दमित मानसिकता, पुरुष-प्रधान सोच, स्त्री के अकेलेपन और उसके ऊपर होने वाले मानसिक एवं सामाजिक उत्पीड़न को पूरी नग्नावस्था में सामने ले आता है।

अंत: अंत में यह हंसी-मजाक एक घुटन भरी और दर्दनाक सच्चाई में बदल जाता है, जहां स्वतंत्र विचारों वाली और आधुनिक सोच की शिक्षिका बेनारे समाज की संकीर्णता के आगे बेबस और अकेली नजर आती है।

2.2 खामोश ! अदालत जारी है : ऐतिहासिकता

विजय तेंदुलकर द्वारा रचित नाटक **'खामोश ! अदालत जारी है'** (मूल मराठी: 'शांतता ! कोर्ट चालू आहे') की ऐतिहासिक, साहित्यिक और रंगमंचीय पृष्ठभूमि बहुत समृद्ध है। आधुनिक भारतीय रंगमंच के इतिहास में इस नाटक को एक **युगांतकारी मील का पत्थर** माना जाता है। इस नाटक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को हम निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के तहत समझ सकते हैं:

1. लेखन और तत्कालीन दौर (1960 का दशक) :

यह नाटक मूल रूप से **वर्ष 1963 में लिखा गया था** और इसका पहला सफल मंचन **1967 में हुआ**। 1960 का दशक भारतीय समाज में संक्रमण (Transition) का दौर था।

- आज़ादी के बाद भारतीय समाज में एक तरफ आधुनिकता, नारी शिक्षा और कामकाजी महिलाओं का उदय हो रहा था।
- वहीं दूसरी तरफ पारंपरिक मध्यवर्गीय समाज अपनी पुरानी और संकीर्ण रूढ़ियों को छोड़ नहीं पा रहा था।
- विजय तेंदुलकर ने तत्कालीन कामकाजी महिलाओं को समाज द्वारा झेले जाने वाले मानसिक अंतर्द्वंद्व को बहुत करीब से देखा और उसे इस नाटक की पृष्ठभूमि बनाया।

2. लोकल ट्रेन की वास्तविक घटना से प्रेरणा

इस नाटक के कथानक का विचार विजय तेंदुलकर को एक **वास्तविक घटना से मिला था**। एक बार वे मुंबई की एक लोकल ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। उसी डिब्बे में शौकिया रंगमंच (Amateur theatre group) के कुछ कलाकार विले पार्ले उपनगर में एक मॉक-ट्रायल का मंचन करने जा रहे थे। उनके बीच की बातचीत को सुनकर तेंदुलकर के मन में एक ऐसे नाटक का विचार कौंधा, जहाँ खेल और हकीकत की दीवारें ढह जाती हैं।

3. वैश्विक साहित्यिक स्रोत (Foreign Literary Inspiration)

इस नाटक का ढांचा वैचारिक रूप से स्विट्जरलैंड के प्रसिद्ध नाटककार **फ्रीड्रिख ड्यूरेनमाट्ट (Friedrich Dürrenmatt) के 1956 के उपन्यास 'डी पान्ने' (Die Panne / Traps)** से प्रेरित है। उस उपन्यास में भी कुछ लोग मिलकर एक मॉक-ट्रायल खेलते हैं, जो बाद में एक वास्तविक अपराध और त्रासदी में बदल जाता है। तेंदुलकर ने इस पश्चिमी विचार को भारतीय सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने (विशेषकर भारतीय स्त्री की त्रासदी) में बेहद खूबसूरती से ढाला।

4. 'रंगायन' संस्था और समांतर रंगमंच आंदोलन

1960 के दशक में मुंबई में **'रंगायन'** नाम की एक नाट्य संस्था सक्रिय थी, जिसने मराठी रंगमंच में व्यावसायिक नाटकों से अलग हटकर 'समांतर और प्रायोगिक रंगमंच' (Experimental Theatre) की शुरुआत की। तेंदुलकर ने यह नाटक इसी संस्था के लिए लिखा था। इसका पहला निर्देशन **अरविंद देशपांडे** ने किया और मुख्य भूमिका में उनकी पत्नी **सुलभा देशपांडे** (मिस बेनारे के रूप में) थीं। इस नाटक की सफलता ने भारतीय रंगमंच को यथार्थवाद (Realism) की एक नई दिशा दी।

5. हिंदी में अनुवाद और राष्ट्रीय पहचान

मराठी में मिली अपार सफलता के बाद प्रसिद्ध रंगकर्मी **कमलाकर सोनटके** ने इसका हिंदी में अनुवाद किया। दिल्ली में **ओम शिवपुरी** के निर्देशन में जब 'खामोश ! अदालत जारी है' का मंचन हुआ (जिसमें सुधा शिवपुरी ने बेनारे की भूमिका निभाई), तो इसने हिंदी नाट्यजगत में तहलका मचा दिया। इसके बाद इसका 16 से अधिक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद और मंचन हुआ। 1970 में विजय तेंदुलकर को इस ऐतिहासिक कृति के लिए **कमलादेवी चट्टोपाध्याय पुरस्कार** और **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार** से नवाजा गया।

ऐतिहासिक **निष्कर्ष:**

ऐतिहासिक रूप से यह नाटक इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने पारंपरिक नाटकों के रूमानी (Romantic) और उपदेशात्मक ढर्रे को तोड़कर समाज की नग्न और कड़वी सच्चाई को मंच पर उतारा। इसे आधुनिक भारतीय नाटक इतिहास का 'प्रस्थान बिंदु' भी कहा जाता है।

2.3 खामोश ! अदालत जारी है : चरित्र-चित्रण

विजय तेंदुलकर के नाटक 'खामोश ! अदालत जारी है' के पात्र किसी न किसी सामाजिक विकृति, कुंठा या पाखंड के प्रतीक हैं। नाटक के महत्वपूर्ण पात्रों का चरित्र-चित्रण इस प्रकार है:

1. मिस लीला बेनारे (मुख्य नायिका)

मिस बेनारे नाटक की केंद्रीय पात्र हैं, जो एक ३४ वर्षीय अविवाहित स्कूल शिक्षिका हैं।

- **जीवंत और आधुनिक:** वह स्वतंत्र विचारों वाली, हंसमुख और अपनी शर्तों पर जीने वाली महिला हैं। वह घिसे-पिटे सामाजिक नियमों की परवाह नहीं करतीं।
- **सच्ची और संवेदनशील:** बच्चों से प्रेम करने वाली और अपने काम के प्रति वफादार हैं। उनके भीतर मातृत्व की गहरी भावना है।

- **शोषित और पीड़ित:** वह पुरुष प्रधान समाज और प्रोफेसर डामले के धोखे का शिकार हैं। अंदर से बेहद अकेली और डरी हुई हैं।
- **विद्रोही:** अंत में उनका लंबा संवाद (Monologue) समाज के पाखंड के खिलाफ एक सशक्त बगावत बन जाता है।

2. श्री काशीकर (जज)

काशीकर नाटक में 'फर्जी अदालत' के न्यायाधीश बनते हैं और असल जिंदगी में भी खुद को समाज का ठेकेदार समझते हैं।

- **रूढ़िवादी और पाखंडी:** वह सामाजिक मर्यादा और संस्कारों की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन असल में संकीर्ण सोच के व्यक्ति हैं।
- **दमनकारी मानसिकता:** वह बेनारे पर लगातार व्यक्तिगत हमले करते हैं। उनका यह मानना है कि "अविवाहित मां बनना समाज के मुंह पर कालिख है", उनकी क्रूर मानसिकता को दिखाता है।
- **घरेलू जीवन में असफल:** वह अपनी पत्नी (मिसेज काशीकर) को हमेशा नीचा दिखाते हैं और सार्वजनिक रूप से उनका अपमान करते हैं।

3. सुखात्मे (वकील)

संवेदनहीन और अवसरवादी: बेनारे उनकी अच्छी दोस्त हैं, लेकिन अपनी वकालत की कला चमकाने के लिए वह बेनारे की व्यक्तिगत जिंदगी की धज्जियां उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते।**क्रूर मजाकिया:** वह कानून की आड़ लेकर बेनारे से ऐसे तीखे और अश्लील सवाल पूछते हैं जो उसे मानसिक रूप से तोड़ देते हैं।

4. पोंक्षे और कर्णिक (सह-कलाकार / गवाह)

ये दोनों समाज के उन युवाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो खुद तो आधुनिक बनने का ढोंग करते हैं, लेकिन अंदर से बेहद संकीर्ण हैं।

- **पोंक्षे:** यह एक क्लर्क है जिसने कभी बेनारे से शादी करने की इच्छा जताई थी (जब तक उसे बेनारे के गर्भवती होने की बात नहीं पता थी)। बाद में वह अदालत में बेनारे के खिलाफ सबसे क्रूर गवाह बनता है, जो उसकी कुंठा और प्रतिशोध को दिखाता है।
- **कर्णिक:** यह नाटक मंडली का एक अन्य सदस्य है, जिसे दूसरों के निजी जीवन के रहस्यों को उजागर करने और गपशप करने में मजा आता है।

5. मिसेज काशीकर

यह जज काशीकर की पत्नी हैं और नाटक की एकमात्र दूसरी महिला पात्र हैं।

- **परंपरावादी और दमित:** वह अपने पति के कड़े नियंत्रण और अपमान को चुपचाप सहती हैं।
- **ईर्ष्यालु प्रवृत्ति:** खुद मां न बन पाने की कुंठा और बेनारे की स्वतंत्रता से ईर्ष्या के कारण, वह एक महिला होकर भी बेनारे के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखातीं, बल्कि उसके चरित्र हनन में पुरुषों का साथ देती हैं।

6. सामंत

यह गांव का एक सीधा-साधा, निर्दोष युवक है जिसे नाटक मंडली केवल अदालत की कार्यवाही समझाने के लिए बुलाती है।

- **अनजान सूत्रधार:** वह अनजाने में प्रोफेसर डामले की एक उपन्यास से मिली-जुली कहानी सुनाता है, जो असल में बेनारे की असली जिंदगी का सच (गर्भवती होना) उगल देती है। वह इस क्रूर खेल में शामिल नहीं होना चाहता, लेकिन उसका सीधापन ही बेनारे के खिलाफ सबसे बड़ा हथियार बन जाता है।

7. प्रोफेसर डामले (अनुपस्थित पात्र)

प्रोफेसर डामले नाटक में कभी मंच पर नहीं आते, लेकिन पूरी कहानी उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती है।

- **कायर और स्वार्थी:** वह एक विवाहित बुद्धिजीवी हैं जो बेनारे को प्यार के जाल में फंसाते हैं और गर्भवती होने पर अपनी इज्जत बचाने के लिए उसे अकेला छोड़कर भाग जाते हैं। वह समाज के तथाकथित 'प्रतिष्ठित' और धोखेबाज वर्ग का प्रतीक हैं।

2.4 खामोश ! अदालत जारी है : उद्देश्य

विजय तेंदुलकर द्वारा रचित नाटक **'खामोश ! अदालत जारी है'** केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखा गया है, बल्कि यह मध्यवर्गीय समाज की सड़ी-गली मान्यताओं पर एक तीखा प्रहार है। इस नाटक के माध्यम से लेखक ने कई गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदेश दिए हैं:

1. पुरुष-प्रधान समाज का पाखंड और दोहरी मानसिकता

नाटक का सबसे बड़ा संदेश समाज के **दोहरे मापदंडों (Double Standards)** को उजागर करना है। नाटक में पुरुष चरित्र (जैसे काशीकर, पोंक्षे, सुखात्मे) खुद को बहुत संस्कारी और कानून-

प्रिय दिखाते हैं, लेकिन एक स्त्री को कटघरे में खड़ा करके उसकी निजी जिंदगी का तमाशा बनाने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती।

2. स्त्री का दमन और शोषण

तेंदुलकर यह दिखाते हैं कि समाज में आज भी **स्त्री की स्वतंत्रता** को एक अपराध की तरह देखा जाता है। मिस बेनारे एक आत्मनिर्भर और हंसमुख महिला है, लेकिन उसका यही खुलापन पुरुषों को खटकता है। जब उसके चरित्र पर बात आती है, तो सारा समाज एकजुट होकर उसे दोषी ठहराने लगता है।

3. मुख्य अपराधी का सुरक्षित बच निकलना

नाटक का एक मर्मस्पर्शी संदेश यह है कि **असली गुनहगार हमेशा समाज में इज्जत की जिंदगी जीता है**। प्रोफेसर डामले, जो विवाहित होते हुए भी बेनारे को गर्भवती कर जिम्मेदारी से भाग जाता है, समाज की नजरों में एक 'प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी' बना रहता है। उस पर कोई उंगली नहीं उठाता, जबकि सारा दोष और सजा बेनारे के हिस्से आती है।

4. न्याय व्यवस्था और समाज की क्रूरता का चेहरा

'अदालत' जिसे न्याय का मंदिर माना जाता है, वह इस नाटक में **मानसिक उत्पीड़न का एक औजार** बन जाती है। 'खामोश !' शब्द का बार-बार इस्तेमाल यह दिखाता है कि समाज पीड़ित (विशेषकर स्त्री) की चीख-पुकार और उसकी बेगुनाही की दलीलों को खामोश कर देना चाहता है। खेल-खेल में शुरू हुआ यह नाटक अंत में एक ऐसे 'कसाईखाने' में बदल जाता है जहाँ बेनारे की भावनाओं की बलि चढ़ा दी जाती है।

5. मानवीय संवेदनाओं का अभाव

नाटक यह भी दिखाता है कि लोग दूसरों के दुखों और मजबूरियों में रस लेते हैं। नाटक मंडली के सभी सदस्य बेनारे के ही दोस्त और सहकर्मी हैं, लेकिन वे उसकी लाचारी का मजाक उड़ाते हैं और उसे प्रताड़ित करने में एक अमानवीय आनंद (Sadistic pleasure) का अनुभव करते हैं।

निष्कर्ष रूप में, यह नाटक समाज को यह आईना दिखाता है कि यदि कोई स्त्री अपनी शर्तों पर गरिमा के साथ जीना चाहे, तो यह रूढ़िवादी समाज उसकी अस्मिता को कुचलने के लिए किस हद तक गिर सकता है।

Unit 4 रचनाकार का परिचय

4.1 विजय तेंदुलकर - सामान्य परिचय :

(6 जनवरी 1928 - 19 मई 2008) आधुनिक भारतीय रंगमंच के एक युगांतकारी नाटककार, पटकथा लेखक और पत्रकार थे। मुख्य रूप से मराठी भाषा में लिखने वाले तेंदुलकर ने भारतीय नाटक और सिनेमा को एक नई, यथार्थवादी दिशा दी। उन्होंने समाज के उस कड़वे सच, हिंसा और पाखंड को मंच पर उतारा, जिससे तत्कालीन समाज अक्सर नजरें चुराता था।यहाँ विजय तेंदुलकर के जीवन, उनकी लेखन शैली और भारतीय साहित्य में उनके योगदान का विस्तृत परिचय दिया गया है:

1. संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म: 6 जनवरी 1928, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में। **करियर की शुरुआत:** उन्होंने बहुत कम उम्र में लिखना शुरू किया। लेखन में आने से पहले उन्होंने एक पत्रकार के रूप में काम किया, जिससे उन्हें समाज के विभिन्न वर्गों को बहुत करीब से देखने का मौका मिला। **निधन:** 19 मई 2008, पुणे (महाराष्ट्र) में।

2. प्रमुख रचनाएँ :

तेंदुलकर ने लगभग 30 पूर्णकालिक नाटक, कई एकांकी और अनेक फिल्मों की पटकथाएँ लिखीं। उनके कुछ सबसे प्रसिद्ध नाटक निम्नलिखित हैं:

- **'शांतता! कोर्ट चालू आहे' (खामोश! अदालत जारी है - 1967):** इस नाटक ने उन्हें देश-विदेश में पहचान दिलाई। यह मध्यवर्गीय समाज के पाखंड और स्त्री उत्पीड़न पर एक तीखा प्रहार है।
- **'घासीराम कोतवाल' (1972):** यह नाटक राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता की भूख और रूढ़िवादिता पर एक बेहतरीन संगीतमय व्यंग्य (Musical Satire) है। यह भारतीय रंगमंच के इतिहास में सबसे अधिक खेले जाने वाले नाटकों में से एक है।
- **'सखाराम बाइंडर' (1972):** इस नाटक ने समाज की कृत्रिम विवाह संस्था और पुरुष प्रधान समाज की नैतिकता को चुनौती दी। अपनी बोल्ड विषय-वस्तु के कारण इस पर काफी विवाद भी हुआ था।

- **'कमला' (1981):** मानव तस्करी और पत्रकारिता की संवेदनहीनता पर आधारित एक बेहद मार्मिक नाटक।

3. सिनेमा में योगदान (Contribution to Cinema)

विजय तेंदुलकर समानांतर सिनेमा के भी एक मजबूत स्तंभ थे। उन्होंने कई क्लासिक फिल्मों की पटकथा और संवाद लिखे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैचारिक रूप से समृद्ध किया: **निशान्त (1975)** और **मंथन (1976)** (निर्देशक: श्याम बेनेगल), **आक्रोश (1980)** और **अर्ध सत्य (1983)** (निर्देशक: गोविंद निहलानी) - 'अर्ध सत्य' को भारतीय सिनेमा इतिहास की सर्वश्रेष्ठ पुलिस ड्रामा फिल्मों में गिना जाता है।

4. लेखन की मुख्य विशेषताएँ :

विजय तेंदुलकर का लेखन अपने समय से बहुत आगे था। उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थीं:

- **मानवीय हिंसा का अन्वेषण:** तेंदुलकर का मानना था कि हिंसा मनुष्य के भीतर ही छिपी होती है। उन्होंने शारीरिक हिंसा के बजाय मानसिक और सामाजिक हिंसा को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया।
- **यथार्थवाद (Realism):** उन्होंने नाटकों में किसी काल्पनिक आदर्शवाद को जगह नहीं दी। उन्होंने समाज को वैसा ही दिखाया जैसा वह वास्तव में क्रूर, स्वार्थी और पाखंडी था।
- **मजबूत महिला पात्र:** उनके नाटकों की महिलाएँ (जैसे 'मिस बेनारे' या 'कमला') केवल बेचारी नहीं हैं, बल्कि वे व्यवस्था से लड़ती हैं और समाज की दोहरी मानसिकता पर सवाल उठाती हैं।

5. सम्मान और पुरस्कार :

साहित्य और सिनेमा में उनके अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें कई शीर्ष सम्मानों से नवाजा गया:

- **पद्म भूषण** (1984), **संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप** (1998), **कालिदास सम्मान** (1999), **राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार:** फिल्म 'मंथन' के लिए सर्वश्रेष्ठ पटकथा का राष्ट्रीय पुरस्कार (1977)।
- विजय तेंदुलकर ने रंगमंच को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर उसे समाज का आईना बनाया। उनके नाटक आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने दशकों पहले थे।

4.2 सरोजिनी वर्मा का जीवन परिचय

श्रीमती सरोजिनी वर्मा हिंदी रंगमंच की दुनिया की एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अनुवादक (Translator) हैं। उन्होंने भारतीय नाटक इतिहास के सबसे महान मराठी नाटककार **विजय तेंदुलकर** की कई कालजयी और बहुचर्चित कृतियों का मराठी से हिंदी में उत्कृष्ट अनुवाद करके उन्हें देशव्यापी पहचान दिलाने में बेहद अहम भूमिका निभाई है।

रंगमंच की दुनिया में अनुवादकों को अक्सर नेपथ्य (पर्दे के पीछे) में रखा जाता है, इसलिए उनका विस्तृत व्यक्तिगत जीवन परिचय (जैसे जन्म तिथि या स्थान) सार्वजनिक रूप से बहुत सीमित है। हालांकि, हिंदी नाटक साहित्य में उनके अभूतपूर्व योगदान का परिचय नीचे दिया गया है:

मुख्य योगदान और अनुवाद कार्य

सरोजिनी वर्मा ने विजय तेंदुलकर के उन नाटकों का अनुवाद किया, जिन्होंने भारतीय समाज की रूढ़ियों, लैंगिक भेदभाव और सत्ता के दोहरे चरित्र पर तीखा प्रहार किया। उनके प्रमुख अनुवाद निम्नलिखित हैं:

1. खामोश! अदालत जारी है (1982):

मूल नाटक: विजय तेंदुलकर द्वारा 1963 में लिखित प्रसिद्ध मराठी नाटक **'शांतता! कोर्ट चालू आहे'**।

महत्व: सरोजिनी वर्मा द्वारा किए गए इस हिंदी अनुवाद ने नाटक को देश भर के हिंदी थियेटरों और शौकीनों के बीच बेहद लोकप्रिय बना दिया। इस नाटक में एक नकली मुकदमे के खेल के जरिए 'मिस लीला बेनारे' नाम की आत्मनिर्भर स्त्री के निजी जीवन को खंगाला जाता है और समाज की पितृसत्तात्मक कुंठाओं को उजागर किया जाता है।

2. सखाराम बाइंडर:

महत्व: यह तेंदुलकर का सबसे विवादास्पद और क्रांतिकारी नाटक माना जाता है। सरोजिनी वर्मा ने इसके अनुवाद में मूल मराठी भाषा के यथार्थ और तीखेपन को हिंदी में जस का तस बनाए रखने का अदम्य साहस दिखाया। उन्होंने इसकी भाषा शैली और चुनिंदा बोल्ड शब्दों का ऐसा सटीक अनुवाद किया कि यह नाटक हिंदी रंगमंच पर बेहद प्राणवान और सशक्त साबित हुआ।

3. अन्य प्रमुख अनुवाद:

- **पंछी ऐसे आते हैं** (*मराठी मूल: अशी पाखरे येती*)

- **दम्भद्वीप**

4. अनुवादक के रूप में सरोजिनी वर्मा की विशेषताएं।

सरोजिनी वर्मा की सबसे बड़ी खूबी यह रही कि उन्होंने केवल शब्दों का अनुवाद नहीं किया, बल्कि **मराठी समाज के सांस्कृतिक परिवेश, मुहावरों और नाटकीय संवेदना** को हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ढाला। यही कारण है कि आज भी जब दिल्ली के श्री राम सेंटर या देश के किसी भी बड़े मंच पर इन नाटकों का मंचन होता है, तो निर्देशकों की पहली पसंद सरोजिनी वर्मा द्वारा किए गए अनुवाद ही होते हैं।

परीक्षा की दृष्टि से पूछे जाने वाले माहत्वपूर्ण प्रश्न

युनिट 1. अनुवाद

1. **अनुवाद** शब्द का क्या अर्थ है? इसकी किन्हीं दो विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख कीजिए।
2. अनुवाद के विभिन्न **प्रकारों** का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. **शब्दानुवाद** और **भावानुवाद** के बीच मुख्य अंतर को स्पष्ट कीजिए।
4. वर्तमान समय में **साहित्यिक अनुवाद की उपयोगिता** और महत्व पर प्रकाश डालिए।
5. हिंदी साहित्य में **अनूदित साहित्य की परंपरा** के विकास क्रम को संक्षेप में समझाइए।

युनिट 2. विजय तेन्दुलकर - खामोश ! अदालत जारी है

1. 'खामोश ! अदालत जारी है' नाटक की **कथावस्तु (Plot)** को अपने शब्दों में संक्षेप में लिखिए।
2. भारतीय रंगमंच के इतिहास में इस नाटक की **ऐतिहासिकता** और इसके महत्व को रेखांकित कीजिए।
3. नाटक की मुख्य पात्रा **मिस लीला बेनारे का चरित्र-चित्रण** कीजिए।

4. 'खामोश ! अदालत जारी है' नाटक के माध्यम से समाज के किस **मध्यवर्गीय पाखंड** पर प्रहार किया गया है?
5. नाटककार विजय तेंदुलकर ने इस नाटक को लिखने का क्या **उद्देश्य** रखा है? स्पष्ट कीजिए।

युनिट 3. मनोज बोरगावकर - नदीष्ट

1. 'नदीष्ट' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता स्पष्ट करते हुए इसकी **कथावस्तु** का सार लिखिए।
2. 'नदीष्ट' उपन्यास में **मनुष्य और पर्यावरण** के बीच के टूटते अंतर्संबंधों को किस प्रकार दर्शाया गया है?
3. समकालीन समय में इस उपन्यास के **मूल उद्देश्य** और जल संकट की चेतावनी पर प्रकाश डालिए।
4. एक पर्यावरण-साहित्य (Eco-literature) के रूप में **'नदीष्ट' उपन्यास की समीक्षा**
5. इस उपन्यास में नदी के किनारे रहने वाले जनजीवन (जैसे मछुआरों) के संघर्षों का क्या चित्रण मिलता है?

युनिट 4. रचनाकार एवं अनुवादक का परिचय

1. मराठी के प्रख्यात नाटककार **विजय तेन्दुलकर** की नाट्य-शैली और उनकी प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए।

2. अनुवादक **सरोजिनी वर्मा** का सामान्य साहित्यिक परिचय देते हुए 'खामोश ! अदालत जारी है' के अनुवाद में उनके योगदान को बताइए।

3. समकालीन लेखक **मनोज बोरगावकर** के साहित्य की मुख्य विशेषताओं और उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

4. अनुवादक **प्रो. गोरख थोरत** का संक्षिप्त परिचय दीजिए तथा 'नदीष्ट' के हिंदी अनुवाद में उनकी भाषाई कुशलता को स्पष्ट कीजिए।

5. किसी भी कृति के मूल लेखक और उसके अनुवादक के बीच वैचारिक तालमेल क्यों जरूरी है? इस पाठ्यक्रम के संदर्भ में समझाइए।

प्रश्नों के नमूना उत्तर

प्रश्न: अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर : अनुवाद एक अत्यंत व्यापक और जटिल प्रक्रिया है। स्रोत भाषा (Source Language) की सामग्री की प्रकृति, विषय-वस्तु और उसके उपयोग के आधार पर अनुवाद के कई प्रकार होते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी और अन्य भाषाविदों के वर्गीकरण के अनुसार, अनुवाद के मुख्य प्रकारों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

1. शब्दानुवाद : **अर्थ:** इसमें स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्य भाषा (Target Language) में हुबहू या अक्षरशः अनुवाद किया जाता है। **विशेषता:** इसमें वाक्य की बनावट और व्याकरणिक नियमों को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता, बल्कि शब्दों के अर्थ पर ध्यान रहता है। **उपयोगिता:** यह वैज्ञानिक सूत्रों, कानूनी धाराओं या प्रशासनिक आदेशों के अनुवाद में उपयोगी होता है, जहाँ एक भी शब्द छूटने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

2. भावानुवाद : अर्थ: इसमें शब्दों के स्थान पर मूल सामग्री के 'भावों' या 'विचारों' को प्रधानता दी जाती है। **विशेषता:** अनुवादक स्रोत भाषा के वाक्य को पढ़ता है और लक्ष्य भाषा में उसके मूल संदेश को अपने शब्दों में व्यक्त करता है। **उपयोगिता:** यह साहित्यिक अनुवाद (कहानी, उपन्यास, कविता) के लिए सबसे उत्तम माना जाता है, क्योंकि इससे अनुवाद में स्वाभाविकता बनी रहती है।

3. छायानुवाद या रूपांतर: अर्थ: इसमें मूल रचना की केवल केंद्रीय थीम या 'छाया' को लिया जाता है और लक्ष्य भाषा की संस्कृति के अनुसार उसमें बदलाव कर दिया जाता है। **विशेषता:** इसमें अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता होती है। वह पात्रों के नाम, परिवेश और कभी-कभी कहानी के अंत को भी बदल देता है ताकि स्थानीय पाठक उससे जुड़ सकें। **उपयोगिता:** नाटकों, फिल्मों की स्क्रिप्ट और विज्ञापनों में इसका सबसे अधिक प्रयोग होता है। (जैसे–विदेशी नाटकों का भारतीय परिवेश में रूपांतरण)।

4. आशुआनुवाद : अर्थ: इसे मौखिक अनुवाद भी कहते हैं। जब एक भाषा में बोली जा रही बात को तुरंत (Real-time) सुनकर दूसरी भाषा में मौखिक रूप से बदला जाता है, तो उसे आशुआनुवाद कहते हैं। **विशेषता:** इसे करने वाले को 'दुभाषिया' (Interpreter) कहा जाता है। इसमें सोचने का समय बहुत कम होता है, इसलिए अनुवादक की दोनों भाषाओं पर तीव्र पकड़ होनी चाहिए। **उपयोगिता:** अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, राजनयिक वार्ताओं (Diplomatic Meets) और विदेशी नेताओं के दौरों के समय इसका उपयोग होता है।

5. तकनीकी या पारिभाषिक अनुवाद : अर्थ: विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, कंप्यूटर विज्ञान और कानून जैसे जटिल विषयों के लिए किया जाने वाला अनुवाद 'तकनीकी अनुवाद' कहलाता है। **विशेषता:** इसमें साधारण शब्दों के स्थान पर 'पारिभाषिक शब्दावली' (Technical Terms) का प्रयोग अनिवार्य होता है। इसमें कल्पना या भावों के लिए कोई स्थान नहीं होता।**उपयोगिता:** मेडिकल रिपोर्ट्स, इंजीनियरिंग मैनुअल, कानूनी दस्तावेज आदि तैयार करने में।

6. सारानुवाद : अर्थ: लंबी पाठ्य सामग्री (जैसे विस्तृत रिपोर्ट, भाषण या शोध-पत्र) का संक्षिप्त रूप में या उसका 'निचोड़' दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना सारानुवाद कहलाता है। **विशेषता:** इसमें केवल मुख्य-मुख्य बिंदुओं को ही लक्ष्य भाषा में अनुवादित किया जाता है, अनावश्यक विवरणों को छोड़ दिया जाता है। **उपयोगिता:** समाचार एजेंसियों, खुफिया विभागों और व्यापारिक संधियों में समय बचाने के लिए इसका व्यापक उपयोग होता है।

निष्कर्ष: इस प्रकार, अनुवाद का कोई भी प्रकार अपने आप में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। एक कुशल अनुवादक आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार इन विभिन्न प्रकारों का समन्वय (मिश्रण) करके ही एक सफल अनुवाद प्रस्तुत करता है।

प्रश्न: नाटककार विजय तेंदुलकर ने इस नाटक ('खामोश! अदालत जारी है') को लिखने का क्या उद्देश्य रखा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : विजय तेंदुलकर आधुनिक भारतीय रंगमंच के एक युगांतरकारी नाटककार हैं, जो समाज के कड़वे यथार्थ को बिना किसी मुखौटे के मंच पर उतारने के लिए जाने जाते हैं। उनका प्रसिद्ध नाटक **'खामोश! अदालत जारी है'** (मूल मराठी: *शांतता! कोर्ट चालू आहे*) केवल मनोरंजन

के लिए लिखा गया नाटक नहीं है, बल्कि यह मध्यवर्गीय समाज की विकृतियों पर किया गया एक गहरा प्रहार है।

1. पुरुष-प्रधान समाज के पाखंड और दोहरे मापदंडों का पर्दाफाश

नाटक का सबसे प्रमुख उद्देश्य समाज के दोहरे चरित्र को उजागर करना है। नाटक में मुख्य पात्रा **मिस लीला बेनारे** के माध्यम से यह दिखाया गया है कि एक पुरुष (प्रोफेसर दामले) जो बेनारे के शोषण और उसकी इस स्थिति के लिए बराबर का जिम्मेदार है, वह समाज में सम्मानित बना रहता है और अदालत की नजरों से दूर रहता है। वहीं दूसरी ओर, सारा समाज मिलकर अकेली बेनारे को कटघरे में खड़ा कर देता है। तेंदुलकर यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि हमारा कानून और समाज पुरुषों के प्रति उदार और महिलाओं के प्रति अत्यंत क्रूर है।

2. मध्यवर्गीय नैतिकता (Middle-Class Morality) पर तीखा प्रहार

तेंदुलकर का उद्देश्य मध्यवर्ग के उस पाखंड को दिखाना है, जहाँ लोग बाहर से अत्यंत सभ्य, सुशिक्षित और संस्कारी दिखने का ढोंग करते हैं, लेकिन अंदर से बेहद हिंसक और कुंठित होते हैं। नाटक में 'मॉक ट्रायल' (नकली अदालत) खेल रहे सभी पात्र–चाहे वह मिस्टर और मिसेस काशिकर हों, वकील सुखात्मे हों, या पोंक्षे हों–असल जिंदगी में असफल और कुंठित लोग हैं। वे कानून और नैतिकता की आड़ लेकर खेल-खेल में एक जीवित स्त्री की भावनाओं की सरेआम धज्जियाँ उड़ा देते हैं।

3. स्त्री की स्वतंत्रता और अस्मिता का प्रश्न उठाना

यह नाटक एक आत्मनिर्भर, कामकाजी और स्वतंत्र विचारों वाली आधुनिक महिला के अस्तित्व की लड़ाई को रेखांकित करता है। मिस बेनारे अपनी शर्तों पर जीना चाहती है और अपनी व्यक्तिगत जिंदगी को समाज से अलग रखना चाहती है। लेकिन समाज किसी भी महिला की इस स्वतंत्रता को पचा नहीं पाता। तेंदुलकर ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज किस तरह किसी स्त्री के निजी जीवन (Privacy) में तांक-झांक करके उसकी अस्मिता को ठेस पहुँचाता है।

4. 'अदालत' और 'कानून' की अमानवीयता को दर्शाना

नाटक का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य न्याय व्यवस्था और संस्थाओं के संवेदनहीन रूप को सामने लाना है। जहाँ मानवीय संवेदनाओं और न्याय की बात होनी चाहिए, वह व्यवस्था केवल नियमों, आरोपों और गवाहों के जाल में फँसकर रह जाती है। 'खामोश! अदालत जारी है' का शीर्षक ही इस बात का प्रतीक है कि जब कोई व्यक्ति (विशेषकर स्त्री) अपनी बेगुनाही और पीड़ा व्यक्त करना चाहता है, तो यह समाज और उसकी व्यवस्था 'खामोश' कहकर उसकी आवाज को दबा देती है।

निष्कर्ष:

संक्षेप में कहें तो, विजय तेंदुलकर का मुख्य उद्देश्य दर्शकों और पाठकों की **सोयी हुई सामाजिक चेतना को झकझोरना** था। वे दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि जिसे हम सभ्य समाज कहते हैं, वह वास्तव में कितना हिंसक और क्रूर हो सकता है। यह नाटक समाज को आत्मनिरीक्षण (Self-introspection) करने का संदेश देता है कि क्या हम वाकई इंसानी भावनाओं की कद्र करना सीख पाए हैं या आज भी हम आदिम युग की तरह किसी निर्बल का शिकार करने में ही अपनी श्रेष्ठता समझते हैं।

---------- **यूनिट 1 और 2 : डॉ. वर्षा कांबळे** ----------

प्रश्न १ . नदीष्ट उपन्यास का परिचय देते हुए कथानक को स्पष्ट कीजिए ?

अथवा

नदीष्ट उपन्यास के कथानक को बताते हुऐ पात्रों का परिचय दीजिए।

- **मनोज बोरगावकर : जीवन परिचय**

- मनोज बोरगावकर समकालीन मराठी साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक, उपन्यासकार और प्राध्यापक के रूप में जाने जाते हैं। उनके चर्चित उपन्यास 'नदीष्ट' के कारण उन्हें विशेष साहित्यिक पहचान मिली। उनके लेखन में नदी, प्रकृति, मनुष्य, वंचित वर्ग का जीवन, मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।
- **1. जन्म और बचपन**
- मनोज बोरगावकर का जन्म अर्जापुर-बिलोली, जिला नांदेड, महाराष्ट्र में हुआ। उनका बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता। ग्रामीण और प्राकृतिक वातावरण का उनके संवेदनशील मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। बचपन से ही उन्हें प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करने की आदत थी।
- उनके साहित्य में प्रकृति और नदी के प्रति जो गहरा लगाव दिखाई देता है, उसके पीछे उनके बचपन के अनुभवों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके अनुसार, बचपन में मिले 'हुलबा' नामक व्यक्ति ने उन्हें प्रकृति को समझने और 'पढ़ने' की दृष्टि प्रदान की।
- 2. शिक्षा
- मनोज बोरगावकर ने नांदेड स्थित नेताजी सुभाषचंद्र बोस महाविद्यालय से राजनीति विज्ञान विषय में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की। राजनीति विज्ञान के अध्ययन ने समाज, सामाजिक संबंधों और मानवीय जीवन को समझने की उनकी दृष्टि को व्यापक बनाया।
- **3. प्राध्यापक के रूप में कार्य**
- मनोज बोरगावकर अध्यापन के क्षेत्र से भी जुड़े हुए हैं। वे नांदेड शहर के वजीराबाद स्थित खुर्शीदबानू आर. मेवावाला आर्ट्स एंड कॉमर्स महिला महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे हैं।
- अध्यापन और साहित्य-सृजन–इन दोनों क्षेत्रों में उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।
- **4. साहित्यिक यात्रा**

- मनोज बोरगावकर ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत कविता और ललित लेखन से की। उनकी प्रकाशित रचनाओं में 'कोरा कागद निळी शाई' नामक कविता-संग्रह और 'अकथ कहानी सद्‌गुणों की' नामक ललित लेख-संग्रह का उल्लेख मिलता है।
- इसके बाद उनका महत्वपूर्ण उपन्यास 'नदीष्ट' प्रकाशित हुआ। 'नदीष्ट' उनकी साहित्यिक पहचान का प्रमुख आधार बना।
- **5. 'नदीष्ट' उपन्यास**
- 'नदीष्ट' मनोज बोरगावकर का चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में नदी केवल एक प्राकृतिक या भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह उपन्यास की महत्वपूर्ण उपस्थिति और जीवन के प्रतीक के रूप में सामने आती है।
- उपन्यास के केंद्र में गोदावरी नदी है। नदी के किनारे लेखक-नायक को अनेक प्रकार के लोग मिलते हैं। उनके जीवन, दुख, संघर्ष, सपने, रिश्ते और अस्तित्व की कहानियाँ धीरे-धीरे सामने आती हैं।
- इस प्रकार नदी और मनुष्य के बीच का संबंध 'नदीष्ट' का केंद्रीय विषय बन जाता है।
- **6. वंचित और उपेक्षित समाज का चित्रण**
- मनोज बोरगावकर के लेखन की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे समाज के मुख्य प्रवाह से दूर रहने वाले लोगों के जीवन को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं।
- उनकी रचनाओं में भिखारी, तृतीयपंथी, दुखी स्त्रियाँ तथा समाज के विभिन्न वंचित वर्गों के लोग दिखाई देते हैं।
- विशेष रूप से सगुणा नामक तृतीयपंथी पात्र के माध्यम से उन्होंने तृतीयपंथी समुदाय के जीवन, सामाजिक उपेक्षा, संघर्ष, पीड़ा और मानवीय गरिमा की आकांक्षा को प्रस्तुत किया है।
- **7. नदी और प्रकृति से संबंध**
- मनोज बोरगावकर के साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र नदी और प्रकृति है। उनके लिए नदी केवल जल का प्रवाह नहीं है। वह मनुष्य के जीवन, भावनाओं, स्मृतियों और अस्तित्व से जुड़ी हुई है।
- उनके लेखन में प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण दिखाई देता है। नदी के प्रवाह के साथ मनुष्य के जीवन का प्रवाह भी जुड़ता है। इसी कारण नदी उनके साहित्य में एक शक्तिशाली प्रतीक बन जाती है।
- **8. 'नदीष्ट' की भाषा-शैली**
- 'नदीष्ट' की भाषा इसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। इसमें मराठी के साथ-साथ हिंदी, उर्दू, तेलुगू और अंग्रेजी के शब्दों का भी स्वाभाविक प्रयोग दिखाई देता है।

- लेखक ने जीवन में जिस प्रकार की मिश्रित भाषा सुनी और अनुभव की, उसी प्रकार की भाषा को साहित्य में स्थान दिया है। इससे उपन्यास की भाषा अधिक जीवंत, स्वाभाविक और बहुआयामी बनती है।
- **9. साहित्यिक विशेषताएँ**
- मनोज बोरगावकर के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
- प्रकृति के प्रति गहरा लगाव।
- नदी को महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना।
- वंचित और उपेक्षित लोगों के जीवन का चित्रण।
- मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता देना।
- **बहुभाषिक और प्रयोगशील भाषा का प्रयोग।**
- ग्रामीण और निम्न-मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण।
- सामाजिक प्रश्नों को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करना।
- मनुष्य और प्रकृति के परस्पर संबंध की खोज।
- सामान्य लोगों के जीवन-संघर्ष को साहित्य में स्थान देना।
- अनुभव और संवेदना पर आधारित लेखन।
- **10. प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ**
- उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनकी प्रमुख रचनाओं में–
- 'कोरा कागद निळी शाई' – कविता-संग्रह
- 'अकथ कहानी सद्‌गुणों की' – ललित लेख-संग्रह
- 'नदीष्ट' – उपन्यास
- इनमें 'नदीष्ट' को विशेष साहित्यिक पहचान प्राप्त हुई है।
- **11. साहित्यिक दृष्टिकोण**
- मनोज बोरगावकर के लेखन में माणुसकी अर्थात मानवता, संवेदना, प्रकृति और मनुष्य के संबंध को विशेष महत्व प्राप्त है।
- उनका साहित्य यह अनुभव कराता है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन, चाहे वह कितना भी साधारण या उपेक्षित क्यों न हो, अपने भीतर एक महत्वपूर्ण कहानी रखता है। लेखक उन कहानियों को सुनने और साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं।
- **निष्कर्ष**
- मनोज बोरगावकर समकालीन मराठी साहित्य के ऐसे संवेदनशील लेखक हैं, जिन्होंने नदी, प्रकृति और मनुष्य के जीवन को अपने साहित्य का प्रमुख आधार बनाया है। उनके

चर्चित उपन्यास 'नदीष्ट' में नदी के किनारे रहने और मिलने वाले विभिन्न लोगों के जीवन-संघर्ष, पीड़ा, संवेदना और मानवीय संबंधों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

- उनके साहित्य में नदी केवल पानी का प्रवाह नहीं है, बल्कि वह जीवन, स्मृति, संघर्ष, संबंध और अस्तित्व का प्रतीक बन जाती है। इसी कारण मनोज बोरगावकर का साहित्य समकालीन मराठी साहित्य में मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ और प्रकृति-बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।
- संक्षेप में
- मनोज बोरगावकर = प्रकृति + नदी + मनुष्य + संवेदना + वंचित समाज + सामाजिक यथार्थ।
- उनकी साहित्यिक पहचान विशेष रूप से 'नदीष्ट' उपन्यास से जुड़ी हुई है, जिसने नदी और नदी के आसपास के मानवीय जीवन को एक विशिष्ट साहित्यिक दृष्टि से प्रस्तुत किया।
- |----------. -

नदीष्ट : मनोज बोरगावकर

आलोचनात्मक लेख :

मनोज बोरगावकर की भाषा मराठी, तेलुगु, अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू भाषाओं के शब्द-संसार से निर्मित हुई है। 'पाठंगुळीवर', 'बाळंतिणीची वज', 'पोहण्याचा किरम्या', 'इतल्ला', 'आसार', 'साफसुथरी माणसं', 'मारीयिले', 'कातिल' जैसे शब्दों के माध्यम से बोरगावकर ने अपना एक स्वतंत्र भाषाविश्व निर्मित किया है। मराठी में यह आज की एक प्रयोगशील कादंबरी है। मनुष्य के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक जीवन को आधार बनाए बिना केवल पात्रों के माध्यम से अभिशप्त व्यक्तियों का जीवन खड़ा करना कठिन कार्य है। लेकिन मनोज बोरगावकर ने इस कठिन कार्य को सहज बना दिया है। आज के समाज से कटी हुई नदी, उसके आसपास का समाज, उसकी मूल्य-व्यवस्था जब अर्थ-केंद्रित हो गई है और नदी का मातृत्व भी समाप्त होता जा रहा है, तब उसके साथ एकरूप हो जाने वाला 'नदीष्ट' मराठी उपन्यास की सीमाओं को तोड़ने वाला उपन्यासकार बन जाता है।

'नदीष्ट' मनोज बोरगावकर का पहला उपन्यास है। यह हर दृष्टि से एक अलग प्रकार का उपन्यास है। कहा जाए तो इसमें बताने के लिए एक कथानक है और कहा जाए तो कोई निश्चित कथानक नहीं है। उपन्यास का कोई पारंपरिक नायक भी नहीं है; लेकिन इसमें अनेक व्यक्ति हैं और उनके मन को भीतर तक झकझोर देने वाली जीवन-कथाएँ हैं। इस उपन्यास में नदी का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह नदी गोदावरी है। उपन्यास के पात्रों की जीवन-यात्रा के कारण यह नदी हमारे मन में अंकित हो जाती है। नदी के चारों ओर सारी घटनाएँ घटती हैं और विभिन्न पात्र सामने आते हैं।

‘नाद’ का उत्पत्तिकोशीय अर्थ ध्वनि, आवाज और छंद है। मराठी भाषा में ‘नाद’ शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग होता है–घंटानाद, पीने का नाद, संगीत का नाद, ताश खेलने का नाद, स्त्री का नाद आदि। इसी प्रकार ‘वह बहुत नादिष्ट है’, ‘वह उसके नादी लगा है’, ‘उसे चित्रकला का नाद है’ जैसे वाक्य भी प्रचलित हैं। नदी, नादी और नदीष्ट–इन सभी अर्थों से यह उपन्यास जुड़ा हुआ है।

उपन्यास का निवेदक नदी और तैरने का दीवाना है। वह नदी का नादिष्ट है, इसलिए ‘नदीष्ट’ है। उसे नदी में तैरने का अत्यंत शौक है। उसकी बैग में हमेशा स्विमिंग कॉस्ट्यूम रहता है। वह किसी कार्यालय में नौकरी करता है और नौकरी के लिए रेलगाड़ी से अप-डाउन करता है। लेकिन कई बार घर जाने के बजाय नदी पर तैरने चला जाता है। जिस प्रकार कोई शराबी घर जाने से पहले शराब के अड्डे पर जाता है, उसी प्रकार यह व्यक्ति नदी पर जाता है। तैरने के इसी जुनून से उपन्यास के पात्र सामने आते हैं और उनकी जीवन-कथाएँ विकसित होती जाती हैं।

निवेदक को नदी अपनी माँ जैसी लगती है। वह पिछले दस वर्षों से नदीष्ट है।

नदी का डोह यानी गहरा जल-कुंड उसे नदी का गर्भाशय लगता है। माँ का गर्भाशय भयावह नहीं होता, इसलिए नदी में निडर होकर तैरा जा सकता है। नदी माँ है, फिर डर किस बात का? फिर भी कभी-कभी उसे डर लगता है। इसलिए वह सोचता है कि यदि नदी में उसकी मृत्यु हो गई तो कोई न कोई घर पर खबर पहुँचा देगा–कम-से-कम पुजारी तो पहुँचा ही देगा।

नदी के किनारे मिलने वाले पात्र

इस नदी पर उसे अनेक पात्र मिलते हैं। कुरूप भिखारिन सकीनाबी, स्टेशन पर दिन-रात भीख माँगने वाली; तृतीयपंथी सगुणा; साँप पकड़ने वाला प्रसाद; भिखारी भिकाजी; नदी किनारे सौ वर्ष से अधिक पुराना इमली का पेड़–ये सभी इस उपन्यास की दुनिया के महत्वपूर्ण हिस्से हैं।

शुरुआत में नदी पर तैरने वालों का एक समूह था। धीरे-धीरे वह समूह छोटा होता गया। उसमें दादाराव, जानवर चराने वाला काळुभैय्या और उसकी काली-कुरूप प्रेमिका, मछलियाँ पकड़ने वाला पुरभाजी झिंगाभोई बामनवाड तथा मंदिर का पुजारी आदि थे। नदी का विस्तृत किनारा, पेड़-पौधे और स्वयं नदी–ये सभी निवेदक के नियमित साथी बन जाते हैं।

बारिश हो या गर्मी, निवेदक हर मौसम में नदी के साथ एकरूप होकर एक-डेढ़ किलोमीटर तक तैरता है। वैसे निवेदक का कोई नाम नहीं है। सगुणा उसे ‘जान’ कहती है और दादाराव ‘बापू’। ये नाम भी कभी-कभार ही आते हैं और संबंधित व्यक्ति के संदर्भ में ही आते हैं।

वह अपनी पत्नी का भी केवल एक बार उल्लेख करता है। पूर्णिमा के दिन वह उसे मिट्टी का छोटा दीपक, तेल-बाती और माचिस देती है और कहती है–

> “वह गोदामाई तुम्हारी इतनी रक्षा करती है। आज पूर्णिमा है। मेरे लिए इतना-सा दीपक नदी के जल में छोड़ देना।”

बस, इतना ही। पूरे उपन्यास में निवेदक लगभग अकेला ही दिखाई देता है। वह गो. नी. दांडेकर के ‘कुणा एकाची भ्रमणगाथा’ के नर्मदा-परिक्रमा करने वाले नायक की तरह है। नर्मदा की परिक्रमा करते समय जिस प्रकार उसे विभिन्न पात्र मिलते हैं और उनकी अद्‌भुत जीवन-कथाएँ सामने आती हैं, उसी प्रकार ‘नदीष्ट’ में भी अनेक पात्र निवेदक से जुड़ते जाते हैं।

‘माचीवरला बुधा’ जिस प्रकार अपने अकेलेपन और जीवन-संघर्ष से जूझता है, उसी तरह ‘नदीष्ट’ भी अकेला है। वास्तव में ‘नदीष्ट’ ही इस निवेदक का नाम है। नदीष्ट ही उसका सत्य है और पूरे उपन्यास में यही नाम उसके लिए उचित लगता है।

नदी का व्यक्तित्व

‘जैत रे जैत’ उपन्यास में जिस प्रकार लिंगोबा का पहाड़ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर खड़ा होता है, उसी प्रकार ‘नदीष्ट’ में नदी को भी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है।

कभी नदी पूरे वेग से बहती है। कभी गर्मी में उसका स्वच्छ पानी गायब हो जाता है। उसका रेत-उपसा किया जाता है। यह रेत निकालना नदी के गर्भ को घायल करने जैसा है–मानो गर्भपात से होने वाली चोट हो।

नदीष्ट सोचता है–

> “हम भी स्त्री के गर्भ तक पहुँच पाए, लेकिन उसके गर्भ की गहराई तक कहाँ पहुँच पाए? लेकिन माँ के लिए तो हम पूरा हृदय हैं! यही हमारे और माँ के प्रेम में हृदय जितना अंतर है।”

लेखक भी गोदावरी के साथ अपने संबंध को याद करता है। वह लिखता है कि पैठण में वह भी कभी गोदावरी में डुबकी लगाया करता था। वह कोई बहुत अच्छा तैराक नहीं था और बाढ़ में तो बिल्कुल नहीं तैर सकता था। वर्षा ऋतु में जब नदी पूरे वेग से बहती थी, तब वह नदी के किनारे खड़े होकर भय और विस्मय से उसे देखता था। इसी प्रसंग से उसे लगभग साठ वर्ष पहले बाढ़ में बह गए अपने सहपाठी कांदे की याद आती है।

रेत का रहस्यमय प्रसंग

बामनवाड का तात बहुत अच्छा तैराक है। एक बार वह कहता है कि नदी के किसी अनजाने स्थान की तलहटी की रेत निकालकर यदि उसे अपने किसी प्रिय व्यक्ति को दिया जाए तो उसकी जिंदगी की इच्छा पूरी हो जाती है।

इस बात के कारण नदीष्ट बहुत दूर नदी में जाता है और लगभग 14-15 फुट गहरे पानी से नदी के ऐसे स्थान की रेत निकालता है जहाँ पहले कोई नहीं गया था। यह प्रसंग रहस्य की ओर बढ़ता है और पाठक स्तब्ध होकर पढ़ता रहता है।

लेकिन प्रश्न उठता है कि नदीष्ट किसकी जिंदगी की इच्छा पूरी करने के लिए इतना बड़ा जोखिम उठाता है?

इस संबंध में नदीष्ट कहता है–

> "रेत इतनी मूल्यवान... लाखों की हो सकती है, यह पहली बार समझ में आया। मेरे लिए, अपने स्तर पर शारीरिक और मानसिक रूप से एक अविश्वसनीय लड़ाई समाप्त हुई थी और वह लड़ाई मैंने जीत ली थी।"

इससे स्पष्ट होता है कि यह संघर्ष वास्तव में उसकी अपनी मानसिक और शारीरिक लड़ाई थी। केवल नदीष्ट होने के कारण वह ऐसा असाधारण साहस करता है। वह नदी का दीवाना है।

सकीनाबी

सकीनाबी कुरूप भिखारिन है, लेकिन वह एक स्त्री है। नदीष्ट उसे रेलवे स्टेशन पर देखा करता था। वह उसे कहती थी–

> "बहुत पटेकूच आया तू! मर जाएगा नदी में बहकर।"

लेकिन स्वयं वह सुबह-सुबह नदी पर आती थी, ताकि अपनी कुरूपता के कारण कोई उसका सौंदर्य न देखे।

एक बार वह नदीष्ट से कहती है कि यदि पैसे मिलें तो रोज स्टेशन पर सोने की चेन पहनकर आया करे, क्योंकि उसके साथ रहने वाले लड़के उसकी जान भी ले सकते हैं।

अंततः वह रेलगाड़ी के नीचे आकर मर जाती है और सकीनाबी की कहानी समाप्त हो जाती है।

दुखों से भरे पात्र

नदीष्ट को ऐसे अनेक पात्र मिलते हैं। वे किसी न किसी कारण से उससे आत्मीयता महसूस करते हैं और अपनी जीवन-कथाएँ उसे सुनाते हैं। नदीष्ट के प्रति उनके भीतर विश्वास और अपनापन पैदा होता है, इसलिए वे अपने मन की गहरी पीड़ा उसके सामने रख देते हैं।

एक अच्छी घर-परिवार वाली स्त्री अपने शराबी पति की शराब छुड़ाने के लिए नदी पर आती है। कुछ आवारा लड़के उसकी इज्जत लूट लेते हैं। बामनवाड यह सब देखता है, लेकिन उन लड़कों के डर के कारण कुछ नहीं कर पाता। इस घटना का उसे बहुत गहरा दुःख होता है।

नदीष्ट की प्रतिक्रिया है–

> **“जीवन यानी टूटे हुए रिश्तों की अजीबोगरीब कहानी।”**

इसी प्रकार इरबा नाम का पात्र अपनी समझदार बेटी की विषैला पदार्थ पीने से हुई मृत्यु के दुःख में डूबा हुआ है। कोई उसे मंदिर की सेवा करने की सलाह देता है, इसलिए वह मंदिर की सफाई आदि करके अपनी बेटी की मृत्यु का दुःख भूलने का प्रयास करती है।

सगुणा : तृतीयपंथी जीवन की पीड़ा

नदीष्ट की तरह सगुणा भी इस उपन्यास की अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र है। वास्तव में मनोज बोरगावकर ने सगुणा के माध्यम से तृतीयपंथी समुदाय की पीड़ादायक दुनिया हमारे सामने रखी है।

सगुणा तृतीयपंथी है। वह रेलवे स्टेशन पर दिखाई देती है और उसी तरह नदी के किनारे भी आती है। उसका नदी पर आना बामनवाड को पसंद नहीं है।

सगुणा नदीष्ट से बेझिझक पूछती है–

> “क्या बोलते तुम हमको?”

इसके माध्यम से तृतीयपंथियों के भीतर छिपे दर्द और उनके जीवन की कठोर वास्तविकता हमारे सामने आती है।

सगुणा अपने बचपन की स्मृतियों को याद करते हुए बताती है कि उसकी दादी उसे भूखे पेट गुड़हल के फूल खिलाती थी और कहती थी कि उसका जीवन उसकी दादी की तरह न बन जाए।

सगुणा मूलतः महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्र की रहने वाली है। तृतीयपंथी दीक्षा लेने के बाद वह अपने गुरु के साथ गोरखपुर, कानपुर, अहमदाबाद और दिल्ली आदि स्थानों पर भटकती रही।

घर से भागने के बाद उसके साथ जो दीक्षा-विधि होती है, वह अत्यंत भयावह और अमानवीय है। उसका शरीर काटकर पुरुषत्व समाप्त करने की प्रक्रिया, बहते रक्त को रोकने के बजाय उसे बहने देना, घाव पर गर्म तेल डालना और वनस्पतियों का लेप लगाना–ये सभी प्रसंग उसके जीवन की भयावहता को सामने लाते हैं।

सगुणा कहती है–

> “अब हमारा वर्तमान किसी भी भूतकाल का मोहताज नहीं होगा। माँ से नाभि-नाल टूटते समय कोई छोटा बच्चा उसे अपनी आँखों से नहीं देख सकता। मैं अभागी थी कि अपनी नाल टूटते हुए मैंने अपनी आँखों से देखा था। यह भभकता हुआ घाव अब जीवनभर ढोना पड़ेगा।”

सगुणा अपनी माँ से मिलने के लिए बहुत तड़पती है। लेकिन वह जानती है कि माँ को फिर से दुःख नहीं देना चाहिए। उसकी पुरानी पीड़ा फिर से नहीं जागनी चाहिए। इसलिए वह अपने हृदय पर पत्थर रखकर माँ से दूर रहने का निर्णय करती है। यह प्रसंग पाठक के भीतर गहरी संवेदना और पीड़ा पैदा करता है।

तृतीयपंथियों का वेदनाविश्व

सगुणा के माध्यम से तृतीयपंथियों का जो दुःख, वेदना और सामाजिक उपेक्षा सामने आती है, वह अत्यंत मार्मिक है। समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता और उनका अपमान करता है–यह गहरी चोट नदीष्ट हमारे सामने रखता है।

सगुणा की कहानी पढ़कर पाठक भीतर तक विचलित हो जाता है।

इस संदर्भ में लेखक को हेनरी शैरियर के 'पैपिलॉन' की याद आती है। समाज से टूटे हुए और स्वयं समाज से दूर होकर कुष्ठरोगियों की दुनिया में जीवन बिताने वाले लोगों का वह संसार भी इसी प्रकार की मानवीय संवेदना को सामने लाता है। शारीरिक रूप से अपना व्यक्तित्व खो चुके कुष्ठरोगी भी अपनी मनुष्यता नहीं खोते। वे पैपिलॉन की सहायता करते हैं। इसी प्रकार समाज में रहते हुए भी समाज द्वारा अस्वीकार किए गए तृतीयपंथियों की पीड़ा सामने आती है।

सगुणा की कहानी का अधिकांश भाग नदी के किनारे नहीं घटता। वह नदी के किनारे आती है। वह इस बात का भी ध्यान रखती है कि नदीष्ट समाज से पूरी तरह न टूट जाए।

नदीष्ट भी समाज के भय के कारण उसे एकांत में नदी के किनारे बुलाता है। दोनों के बीच एक सूक्ष्म संबंध और आत्मीयता विकसित होती है। उनके बीच एक सुप्त 'बॉन्डिंग' बन जाती है।

नदीष्ट के मन में प्रश्न उठता है–

> "वह पहले पुरुष था इसलिए, या मैं स्वयं भीतर से हिजड़ा था इसलिए?"

लेकिन सगुणा एक बौद्धिक और अनुभवी स्त्री के रूप में सामने आती है। उसका बौद्धिक विकास किसी सैद्धांतिक शिक्षा से नहीं, बल्कि जीवन के कटु अनुभवों को सहकर हुआ है। नदीष्ट को लगता है कि उसका यह 'इंटेलेक्ट' जीवनानुभव से निर्मित है।

सगुणा के जीवन के पन्नों में भले ही बहुत-सा दर्द और करुणा है, फिर भी उसने अपने जीवन में जो उदात्तता बचाकर रखी है, वह नदीष्ट को प्रभावित करती है।

नदीष्ट को छोड़कर जाते समय सगुणा उसे समझाती है। अपनी माँ से न मिलने के बारे में वह जो विचार करती है, उससे नदीष्ट बेचैन हो जाता है।

मालाडी

मराठी उपन्यासों में इससे पहले भी तृतीयपंथियों का चित्रण हुआ है, लेकिन लेखक के अनुसार वे चित्रण अक्सर सतही, प्रचारात्मक और एकांगी रहे हैं। मनोज बोरगावकर ने सगुणा के माध्यम से तृतीयपंथी जीवन की दुनिया को गहरी संवेदना और तटस्थता के साथ प्रस्तुत किया है।

सगुणा की सहेली मालाडी की कहानी भी अलग होते हुए ऐसी ही पीड़ा से भरी है। 'मालाडी' नाम के भीतर ही उसकी पीड़ा छिपी है। वह एक पुरुष साथी रखती है, जिसे 'गिरिया' कहा जाता है। उससे गर्भधारण न हो, इसलिए वह प्रतिदिन माला-डी की गोली लेती है। आगे चलकर यही 'माला-डी' उसका नाम बन जाता है।

यह नामकरण उसके मानसिक और सामाजिक जीवन की विडंबना को दर्शाता है।

रौनक और प्रसाद

जेल में रहने वाला रौनक अपने ऊपर हुए यौन अत्याचार के कारण आत्महत्या कर लेता है।

नदी पर आने वाले प्रसाद और उसके साँप पकड़ने के कौशल की कहानी भी उपन्यास में आती है। साँप पकड़ने की कला का वर्णन बहुत प्रभावशाली है। बोरगावकर की भाषा-शैली के कारण यह प्रसंग भी 'नदीष्ट' में एकरूप होता हुआ दिखाई देता है।

लेकिन अन्य पात्रों की तुलना में 'प्रसाद-साँप' की कथा नदीष्ट के मूल अनुभव से उतनी गहराई से जुड़ती हुई नहीं दिखाई देती। लेखक के अनुसार यदि इस कथा को हटा दिया जाता, तो भी उपन्यास के आशय और अभिव्यक्ति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

फिर भी उपन्यास में आने वाले अन्य पात्र हमारे मन में बस जाते हैं। उनका दुःख और उनकी पीड़ा हमारे भीतर उतर जाती है और वे वहाँ से चले जाते हैं। यही मनोज बोरगावकर की लेखन-शैली की विशेषता है।

भिकाजी

मूलतः कोंकण का रहने वाला भिकाजी एक भिखारी है। नियति ने उसके साथ बहुत अन्याय किया है। वह कभी अच्छी नौकरी करता था। एक दुर्घटना में बिल्ली समझकर उसके हाथों अपनी ही बेटी की हत्या हो जाती है। उसे सजा मिलती है।

सजा पूरी होने के बाद जब वह जेल से बाहर आता है, तब उसके घर लौटने के सारे रास्ते बंद हो चुके होते हैं। अंततः वह गोदावरी के किनारे भिखारी के रूप में जीवन बिताने लगता है।

भिकाजी की कहानी भी अत्यंत दुखद है।

इस प्रकार अनेक पात्र नदीष्ट के जीवन में आते हैं। नदी के किनारे उनका नदीष्ट से संबंध बनता है और उनकी जीवन-कथाएँ सामने आती हैं। इन्हीं पात्रों के माध्यम से नदीष्ट का अपना व्यक्तित्व भी विकसित होता है।

नदीष्ट नौकरी करता है, उसका परिवार है, वह रेलगाड़ी से अप-डाउन करता है, वह संवेदनशील और भावुक है तथा जिद्दी भी है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह नदी से अत्यंत प्रेम करता है।

उपन्यास में एक अत्यंत सुंदर विचार आता है–

> "नदी का तल कभी-कभी मिल जाता है, लेकिन उसकी गहराई का पता लगाना कठिन होता है।"

यदि एक छोटे-से मनुष्य के भीतर का अंतरंग समझना इतना कठिन है, तो इतनी गहरी नदी का अंतरंग कैसे समझा जा सकता है?

अंततः नदी और मनुष्य के जीवन का यही सत्य शेष रह जाता है।

नदी और नदीष्ट का संबंध अटूट है। नदी उसके अस्तित्व में ही एकरूप होती हुई दिखाई देती है।

उपन्यास का अंतिम भाग

कादंबरी का अंतिम अध्याय कुछ हद तक निष्कर्ष जैसा लगता है। लेखक के अनुसार यदि उसे हटाया जाता, तो उपन्यास उचित स्थान पर समाप्त हो सकता था। हालांकि यह लेखक का व्यक्तिगत मत है।

भाषा और शैली

मनोज बोरगावकर की भाषा मराठी के साथ-साथ तेलुगु, अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू के शब्दों से निर्मित हुई है। 'पाठंगुळीवर', 'बाळंतिणीची वज', 'पोहण्याचा किरम्या', 'इतल्ला', 'आसार', 'साफसुथरी माणसं', 'मारीयिले', 'कातिल' जैसे शब्द उनके स्वतंत्र भाषाविश्व का निर्माण करते हैं।

'नदीष्ट' मराठी की समकालीन प्रयोगशील कादंबरी है। सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक जीवन को सीधे केंद्र में रखे बिना केवल विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिशप्त और पीड़ित मनुष्यों का जीवन प्रस्तुत करना कठिन है। मनोज बोरगावकर ने इस कठिन कार्य को प्रभावशाली ढंग से पूरा किया है।

आज के समाज से अलग होती जा रही नदी, उसके आसपास का समाज, आर्थिक मूल्यों से संचालित होती सामाजिक व्यवस्था और समाप्त होता नदी का मातृत्व–इन सबके बीच नदी के साथ एकरूप हो जाने वाला 'नदीष्ट' मराठी उपन्यास की पारंपरिक सीमाओं को तोड़ता है।

पुस्तक विवरण

मराठी कादंबरी : नदीष्ट

लेखक : मनोज बोरगावकर : हिंदी अनुवाद :-गोरख थोरात

.दीष्ट' नदी, मनुष्य, अकेलापन, पीड़ा, तृतीयपंथी जीवन, सामाजिक उपेक्षा, मानवीय संवेदना और प्रकृति के साथ मनुष्य के गहरे संबंध को केंद्र में रखने वाली प्रयोगशील मराठी कादंबरी है। नदी यहाँ केवल भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि वह माँ, जीवन, स्मृति, पीड़ा और अस्तित्व का प्रतीक बन जाती है।। ----------

;;;;----------**..2 लघुत्तर**

'नदीष्ट' मनुष्यों की प्रवाही कहानियाँ है कथा के माध्यम से समझाऐ ?

'नदीष्ट' : मनुष्यों का नदी में घुल-मिल जाना भी अत्यंत प्रवाही हो सकता है, इसका वर्णन करने वाला उपन्यास स्पष्ट कीजिए ?

मनोज बोरगावकर कृत 'नदीष्ट' उपन्यास.की समीक्षा कीजिए ?

मानव सभ्यता का उद्‌गम और उसका विकास नदी के किनारे ही हुआ। नदी और मनुष्य का संबंध अत्यंत प्राचीन है। इस संबंध में दोनों ने समय-समय पर एक-दूसरे पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास किया है। लेकिन इन सभी बातों से परे जाकर मनुष्यों का नदी में घुल-मिल जाना कितना अत्यंत प्रवाही हो सकता है, इसका वर्णन करने वाला उपन्यास है–मनोज बोरगावकर लिखित 'नदीष्ट'।

'नदीष्ट' की कहानी नदी में तैरने जाने वाले एक युवा नायक के निरीक्षण से शुरू होती है। लेकिन उसके निरीक्षण में केवल नदी का परिवेश ही नहीं है, बल्कि नदी के भीतर और बाहर की दुनिया में घटित होने वाली घटनाओं के संगम का भी सूक्ष्म निरीक्षण है। इस संगम के माध्यम से लेखक ने नदी और मनुष्य की दुनिया का एक समानांतर तथा अत्यंत पठनीय संसार निर्मित किया है।

कहा जाता है कि प्रकृति के साथ एकरूप होते समय नदी मनुष्य को हमेशा कुछ न कुछ सिखाती रहती है। लेकिन जो लोग उसके प्रवाह को गंदला करते हैं, उन्होंने उसके नदीपन को ही नष्ट कर दिया है। मनुष्य जिस प्रकार नदी को भीतर और बाहर से गंदला कर रहा है, उसी प्रकार मनुष्य के मन भी धीरे-धीरे गंदले होते जा रहे हैं।

इस गंदलेपन की परत को हटाकर नदी का तल हमें दिखाने वाला उपन्यास है–'नदीष्ट'।

मनुष्य के भीतर यह गंदलापन आखिर आया कहाँ से? मनुष्य के व्यक्तित्व और उसके निर्माण में इसका कितना योगदान है? मनुष्य अपने आसपास की दुनिया को किस दृष्टि से देखता है? क्या उसके भीतर का संकीर्ण दृष्टिकोण परंपराओं की गलत व्याख्या से उत्पन्न हुआ होगा? यह संकीर्णता इतनी दृढ़ और टिकाऊ कैसे हो गई? उससे संघर्ष करने वाले लोगों के हिस्से में आखिर क्या आता है? सुख और दुःख के बीच झूलते हुए मनुष्य भीतर से कमजोर और थका हुआ नहीं हो जाता होगा?

ऐसे अनेक मानवीय भावनाओं और प्रश्नों की उलझनों का अर्थ उपन्यास का नायक समझने का प्रयास करता है। उसका यह निरंतर अर्थ-खोज का प्रयास पाठक की अंजलि में भी समझदारी और जीवन-बोध भरता रहता है।

मानवता और मनुष्यता की बातें करते हुए कई बार हम स्वयं भी भटकते हुए भीतर से सूखते चले जाते हैं। हम अपने भीतर की नमी समाप्त हो जाने तक आत्ममुग्धता को पकड़े रहते हैं। इसी आत्ममुग्धता की तंद्रा को 'नदीष्ट' का प्रत्येक घटक धीरे से भंग करता है।

कभी इसमें नदी के घाट पर मिले हुए लोग होते हैं, तो कभी नायक के प्रश्नों की कभी समाप्त न होने वाली खोज की कहानी। इस कहानी में हमें ऐसे अनेक पात्र मिलते जाते हैं, जिन्हें हमने अनजाने में अपने जीवन से खो दिया है। इसलिए उपन्यास का नायक हमें प्रत्येक पात्र की कहानी में अपने ही अतीत को खोजने के लिए विवश करता है।

गोदावरी नदी के विशाल पात्र में एक नौकरी करने वाला युवक नियमित रूप से तैरने जाता है। उसे तैरने का जुनून है। वह अलग-अलग समय पर गोदावरी के जल में उतरता है—कभी सुबह, कभी दोपहर और कभी शाम को।

नदी के प्रति उसकी जिज्ञासा अपार है। वह तैरने में अत्यंत कुशल है। इसलिए नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरकर जाना उसके लिए केवल साहस का काम नहीं, बल्कि खोज का काम है। इस खोज में नायक इतना डूबा हुआ है कि नदी का प्रवाह उसे अपने से अलग नहीं होने देता। इसके पीछे के कारण पाठक को अंतर्मुखी बना देते हैं।

जब नायक नदी के पानी में उतरता है, तब वह आत्मीयता के साथ नदी के स्वरूप का अनुभव करता रहता है। उसका डोह, उसका प्रवाह, उसमें मौजूद गहरे-उथले स्थान, उसके मोड़, उसका अहंकार, उसकी गहराई, लंबाई और चौड़ाई—इन सबको उसने समझ लिया है। फिर भी उसकी जिज्ञासा उसे नदी के मोह से अलग नहीं होने देती।

इस मोह का कारण उसकी भावुकता है। लेकिन उसकी भावुकता केवल नदी के जल और उसके पात्र तक सीमित नहीं है। इस भावुकता के साथ सहानुभूति भी जुड़ी हुई है। यही कारण है कि नायक को मिलने वाले विभिन्न पात्रों का जीवन हमारे सामने जीवंत होकर आता है।

इन जीवन-कथाओं में केवल दुःख, गरीबी और विषमता ही नहीं है, बल्कि कहीं-कहीं संतोष, तृप्ति और स्थिरता की लहरें भी दिखाई देती हैं।

समूह की संकीर्ण मानसिकता के शिकार बने सगुणा, मालाडी, भिकाजी और साकिनाबी, तथा जीवनभर संघर्ष करते-करते अपनी जिंदगी को संघर्ष में ही घोल देने वाले दादाराव, बामनवाड और कालूभैया जैसे पात्रों की कहानियाँ एक साथ हमारे भीतर करुणा और संवेदना उत्पन्न करती हैं। साथ ही वे हमें जीवन को कुछ दूरी से, निर्मोह होकर देखने के लिए भी विवश करती हैं।

'नदीष्ट' की कहानी नदी को अनुभव करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही कहानी जैसी लगेगी। लेकिन इसके साथ-साथ नदी के भीतर और उसके किनारों पर कितनी चीजें और कैसी-कैसी जीवन-कथाएँ छिपी हुई हैं, इसका बोधात्मक पक्ष भी उपन्यास सामने लाता है।

नायक को लगा हुआ तैरने का जुनून ही उसे 'नदीष्ट' बना देता है। नदी के भीतर और बाहर झाँककर देखने का नायक का यही जुनून 'नदीष्ट' है।

जिस प्रकार कोई जुनून एक सीमा के बाद मनुष्य को जुनूनी बना देता है, उसी प्रकार जब हमें नदी के भीतर और बाहर का वास्तविक रूप दिखाई देने लगता है, तब हम भी धीरे-धीरे 'नदीष्ट' होते जाते हैं। इतना कि हमें ऐसा अनुभव होने लगता है मानो हम स्वयं नदी के प्रवाह में सहज रूप से तैर रहे हों।

नदी के साथ-साथ मनुष्यों की खोज का यह रोमांचकारी सफर हमें भी अपने आकर्षण में बाँध लेता है। सहज और छोटे-छोटे प्रसंगों को पढ़ते हुए केवल पुरानी यादों की भावुकता में उलझे बिना लेखक ने मनुष्यों के अंतरंग संसार को अत्यंत संयमित ढंग से प्रस्तुत किया है। यही इस उपन्यास की विशेषता है।

मोहित करने वाली लेखन शैली, संक्षिप्त और प्रभावी वर्णन, कथ्य की सुघड़ता, निरीक्षण की सुंदरता और सामाजिक वास्तविकता पर की गई सूक्ष्म टिप्पणियों के कारण उपन्यास के कथानक को लेकर पाठक की उत्सुकता लगातार बढ़ती जाती है।

संक्षेप में कहा जाए तो लेखक ने नदी की कहानी सुनाते हुए मनुष्यों के जीवन को अत्यंत कुशलता से उद्घाटित किया है। इसलिए मनुष्य के भीतर मौजूद भावनाओं और अनुभवों के गहरे डोह की तह तक आसानी से पहुँचा जा सकता है।।

----------@---------- डॉ महारुद्र सिरसट

-